Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

झाँसी के इतिहास में लक्ष्मीबाई का योगदान

विनोद कुमार सिंह
शोधच्छात्र,
गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज,
(केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली)

शोध आलेख सार– रानी लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थी। इन्होंने न केवल भारत की बल्कि विश्व की महिलाओं को गौरवान्वित किया। इन्होंने स्वतन्त्रता के लिए रणभूमि में हँसते–हँसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। भारतीय स्वतंत्रता के लिए सन् 1857 में लड़े गए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास इन्होंने ही अपने रक्त से लिखा था। आज हम सभी भारतीयों के लिए रानी लक्ष्मीबाई का जीवन आदर्श के रूप में है।

मुख्य शब्द–झाँसी, इतिहास, महिला, लक्ष्मीबाई, वीरांगना, भारतीय स्वतंत्रता।

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा झाँसी की रानी पर लिखी ये कविता उनके सम्पूर्ण जीवन वृतान्त को दर्शाती है–

सिंहासन हिल उठे राजवंशो ने
भुकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में आई फिर से
नई जवानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने
पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन
में ठानी थी।
बुंदेले हर बोलो के मुँह हमने सुनी
कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी
वाली रानी थी।

यह कविता हर भारतीय के हृदय से नवस्फूर्ति और नवचेतना का संचार करती है।

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन परिचय :

रानी लक्ष्मीबाई का बचपन बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब और राव साहब के साथ खेलते तथा पढ़ते हुए बीता। पुरूषों के साथ तीर–तलवार और घुड़सवारी आदि सीखने के कारण इनके चरित्र और व्यक्तित्व में स्वभावतः वीर पुरुषों की भाँति गुणों का विकास हुआ। बाजीराव पेशवा ने उन्हें वीरतापूर्ण कहानियाँ सुनाकर उनके हृदय में स्वतंत्रता के प्रति प्रेम उत्पन्न कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर 1828 ई0 वाराणसी भारत में हुआ था। बचपन में माता–पिता ने इनका नाम मनुबाई रखा था। बचपन में ही इन्होंने घुड़सवारी और अस्त्र–शस्त्रों का संचालन भली–भांति सीख लिया था।

लड़की होते हुए भी प्रारम्भ में ही उनमें एक अच्छे योद्धा के सभी गुण विद्यमान थे। इन्हीं गुणों ने बाद में जीवन में उनकी बड़ी सहायता की। ये घुड़सवारी और तीरंदाजी में इतनी कुशल थी कि बड़े–बड़े योद्धा इनका मुकाबला करने में घबराहट महसूस करते थे। यह नाना जी पेशव राव की मुँहबोली बहन थीं। वो इन्हें प्यार से छबीली कहकर पुकारते थे। लक्ष्मीबाई के पिता का नाम मोरोपन्त तथा माता का नाम भागीरथी बाई था। चार–पाँच साल की उम्र में इनकी माता का देहान्त हो गया था। 20 वर्ष की आयु में इनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हो गया। हिन्दू प्रथा के अनुसार ससुराल में उन्हें नया नाम दिया गया। अब उनका नाम लक्ष्मीबाई हो गया। दुर्भाग्यवश इनका वैवाहिक जीवन बहुत दिनों तक नहीं चला। अपने विवाह के दो वर्ष के भीतर ही ये विधवा हो गयी। उच्च गुणों से सम्पन्न महिला होते हुए भी इन्होंने विपत्ति का सामना बड़ी ही बहादुरी के साथ किया।

रानी लक्ष्मीबाई का संघर्षपूर्ण जीवन एवं योगदान :

प्रारम्भ में भी रानी लक्ष्मीबाई का गवर्नर जनरल के साथ विवाद हुआ। क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई की कोई संतान नहीं थी। इसलिए उन्होंने किसी बालक को गोद लेने का फैसला किया। भारत के तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। क्योंकि गर्वनर झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाना चाहते थे। लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के इस अन्याय को बर्दाश नहीं किया। और उनके विरूद्ध उठ खड़ी हुई। उन्होंने भारत में विदेशी शासन के विरूद्ध क्रांति का नेतृत्व किया। उन्होंने गर्वनर जनरल के आदेशों को मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने एक बालक को गोद लेकर अपने राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया। नाना साहब, तात्या टोपे और कुँवर सिंह जैसे देशभक्त पहले से ही अंग्रेजों का विरोध कर रहे थे। और मौके की तलाश में थे उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया।

उस समय भारत छोटे–छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। लोगों में आपसी फूट थी। ऐसे में कुछ देशद्रोही झाँसी में घेरा डाल दिये। पहली बार में रानी ने उनकी माँग पूरी कि परन्तु दुसरी बार जब पुनः ये देशद्रोही घेरा डाले तो लक्ष्मीबाई बड़ी बहादुरी से लड़ी और दुश्मनों के छक्के छुड़ाकर उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया।

सितम्बर 1857 में अंग्रेजों ने झाँसी पर धावा बोल दिया। इग्लैण्ड से बड़ी संख्या में सैनिकों को लाया गया। रानी से आत्मसमर्पण करने को कहा गया। उन्होंने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया। परिणामस्वरूप विशाल अंग्रेजी सेना ने झाँसी पर धावा बोल दिया और उस पर कब्जा कर लिया। इतना होने पर भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी। इसी समय तांत्या टोपे की मृत्यु का भी समाचार उन्हें मिला। इससे वह बहुत दुःखी हुई परन्तु उन्होंने अपनी दृढ़ता नहीं छोड़ी। उन्होंने ऐलान किया कि–

''जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूँद भी शेष है, और मेरे हाथ में तलवार है, तब तक झाँसी की पवित्र भूमि पर कोई भी विदेशी पैर रखने का साहस नहीं कर पायेगा।''

इसके कुछ दिन बाद लक्ष्मीबाई और नाना साहब ने मिलकर ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। लेकिन उनके एक प्रधान दीवान अंग्रेजों से मिल गया। फलस्वरूप उसके देशद्रोह ने रानी की कमर तोड़ दी और उन्हें ग्वालियर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। ग्वालियर छोड़ने के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने नई सेना का गठन करना प्रारम्भ कर दिया परन्तु उनके पास ऐसा करने को पर्याप्त समय नहीं था।

कर्नल स्मिथ ने विशाल अंग्रेजी सेना के साथ झाँसी पर आक्रमण कर दिया। वे बड़ी बहादुरी से लड़ी। युद्ध में वह पुरी तरह घायल हो गयी थी। फिर भी जब तक वह जीवित रही स्वतंत्रता की पताका को नीचे नहीं गिरने दिया तथा वीर गति को प्राप्त हो गयी और इनका निधन 17–18 जुन 1858 (उम्र 29) कोटा की सराय, ग्वालियर में हुआ था।

उपसंहार :

स्वतंत्रता का पहला संग्राम भारतीय हार गए। लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने भारत भूमि पर स्वतंत्रता और बहादुरी के ऐसे बीज बो दिए, जिनसे अन्ततः भारत स्वाधीन हुआ।

अंग्रेजों के विरूद्ध रणयज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने वाले योद्धाओं में वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई का नाम सर्वोपरि माना जाता है। अपने शौर्य से उन्होंने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए थे।

युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई ने वीरगति प्राप्त की। मृत्यु को वरण करके वीरतापूर्ण साहस के लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. झाँसी की रानी (कविता) : सुभ्रदा कुमारी चौहान
2. झाँसीश्वरी चरित : सुबोध चन्द्र पंत
3. झाँसी की रानी (उपन्यास) : वृन्दावन लाल वर्मा
4. झाँसी की रानी : महाश्वेता देवी
5. आँखों देखा गदर : अमृत लाल नागर